दिसंबर, 2019 सहयोग राशि ₹ 100 | जनसंचार के सरोकारों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका

मीडिया विमर्श

ISSN 2249-0590

Scanned with CamScanner

मीडिया प्रोफेशनलों के आत्मचिंतन और आत्ममंथन का प्रकल्प
ISSN 2249-0590

मीडिया विमर्श

वर्ष–14, अंक–52–53, जुलाई–दिसम्बर 2019 (संयुक्तांक)
वेब पेज - mediavimarsh.page

मानद सलाहकार संपादक
विश्वनाथ सचदेव, अष्टभुजा शुक्ल

अतिथि संपादक
डॉ. सी.जयशंकर बाबु

संपादक
प्रो. श्रीकांत सिंह

संपादक मंडल
डॉ. गोपा बागची, डॉ. सुभद्रा राठौर, डॉ. आरती सारंग

कार्यकारी संपादक
प्रो. संजय द्विवेदी
मो. 09893598888

मुख्य प्रबंध संपादक
अरविंद तिवारी

प्रबंध संपादक
प्रभात मिश्र, शीतलानंद तिवारी

समस्त पत्र व्यवहार का पता
428–रोहित नगर, फेज–1, भोपाल–462039 (मप्र)
मोबाइल : 09893598888
E-mail: mediavimarsh@gmail.com

कवर पेज फोटो आभार सहित : केरल टूरिज्म

सहयोग राशि
यह अंक : ₹ 100, वार्षिक : ₹ 200, (व्यक्तिगत) : ₹ 400 (संस्थागत)

मनीआर्डर, ड्राफ्ट या चेक मीडिया विमर्श-भोपाल के नाम से ही भेजें। बाहर के चेक में 40 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

समस्त पद अवैतनिक, रचनाओं का दायित्व रचनाकारों पर।
किसी भी विवाद का जूरिसडिक्शन रायपुर होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक भूमिका द्विवेदी द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 37, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित कराकर एम.आई.जी.– 37, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, कचना, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक : श्रीकांत सिंह

इतिहास-विकास

प्रसीता पी. 11
डॉ. रजनीश कुमार मिश्र 14
डॉ. सूर्या बॉस 19
डॉ. शबाना हबीब 21
अश्विन आर.एस. 25

पत्रकारिता

प्रो. के.वनजा 27
डॉ. जे.रामचंद्रन नायर 32
सुप्रिया ई. 38

स्त्री शक्ति

फसीला एम. 41
डॉ. लीना बी.एल. 45
डॉ. सुप्रिया पी. 49
विजया चंद्रन 54

मूल्यांकन-विश्लेषण

प्रो. मोहनन एन. 56
पिजु एस.जी. 59
डॉ. पी.आर. हरीन्द्र शर्मा 61

साहित्य और मीडिया

रम्या वी 65
रेशमी एस. 67

शोध-पत्र

गीता कुमारी 147

श्रद्धांजलि

गिरीश कर्नाड 152
जयकृष्ण गौड़ 154

साक्षात्कार

डॉ. एम.पी.पद्मनाभन 71
मणिकंठन आचारी 74
अनीक कुमार टी.के. 76
सुरेश उन्नीथन 82
अभिलाषा मोहनन 86

सिनेमा

प्रो. प्रमोद कोवप्रद 90
शाली पद्मावती पी. 92
डॉ. पी. प्रिया 95
डॉ. रंजित एम. 100
डॉ. के. वत्सला 'किरण' 104
अमर्था ए. नायर 109
डॉ. डी.रेजी कुमार 114
जॉबिन फ्रांसिस एंड डॉ. बी बेनसन 118

रेडियो-टेलीविजन

डॉ. रंजीत रविशैलम 121
क्रिस्टलिन मेरी तोमस 123
सी.श्रीवैष्णवी 125

वेब मीडिया

डॉ. सी.जयशंकर बाबु 128
ए.राधिका एवं डॉ. वी.आम्बेडकर 132

पुस्तक समीक्षा

संतोष रंजन 136
फिरदौस खान 139
प्रो. संजय द्विवेदी 141
लोकेन्द्र सिंह 144
मीडिया विमर्श डेस्क 146
लोकेन्द्र सिंह 157

Scanned with CamScanner

स्त्री शक्ति
डॉ. सुप्रिया पी.

49

नई चेतना का केंद्र बनी महिला पत्रकारिता

भारत में पत्रकारिता का इतिहास लगभग 200 वर्षों का है। केरल के संदर्भ में साक्षरता अभियान से हुए परिवर्तन में पत्रकारिता का विशेष योगदान रहा। मुद्रण के आविष्कार से मानव विकास के क्षेत्र में एक नई क्रांति का आरंभ हुआ। मुद्रण के साथ पत्रकारिता का विकास पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्र आदि के माध्यम से राजनीतिक सामाजिक परिवर्तनों को संबल मिला। 1847 में कन्नूर जिले के तलश्शेरी से प्रकाशित 'राज्य समाचारम' पहला समाचारपत्र है। डॉ. हरमन गुंडर्ट इसके संपादक थे। इसके बाद विभिन्न प्रकार के समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का विकास केरल में हुआ। तब से लेकर 1855 तक लगभग 26 पत्रिकाएँ प्रकशित हुईं। अब कुल मिलाकर लगभग 150 पंजीकृत दैनिक पत्र हैं, जिनमें दीपिका, मलयाला मनोरमा, मातृभूमि, केरल कौमुदी, देशाभिमानी, चंद्रिका आदि प्रमुख हैं। दैनिक पत्रों के अलावा अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं।

केरल की प्रारंभिक पत्रकारिता उन्नीसवीं सदी के प्रथम दशक में विकसित होने लगी। केरल के तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक जागरण में पत्रकारिता का विशेष योगदान रहा। नागरिक अधिकारों के प्रति सचेत करने, नैतिक मूल्यों का बोध कराने, राष्ट्र प्रेम और मातृभाषा के प्रति अनुराग जगाने के उद्देश्य में ये सफल रहें। इसके साथ-साथ मलयालम साहित्य में संशोधन-सुधार भी होने लगे। निबंध, कविता, आत्मकथ्य, उपन्यास, समीक्षा, कहानी से गद्य साहित्य का विकास हुआ। इस दौर में केरल के महान साहित्यकार जैसे केरल वर्मा वलिया कोयीतम्पूरान, ए.आर. राज, राज वर्मा, कुंजी कुट्टन तम्पूरान, अप्पन तम्पूरान, अस्सन, उल्लूर और वल्लतोल ने इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से मलयालम साहित्य में प्रवेश किए। राजनीतिक विकास में भी इन पत्र-पत्रिकाओं का योगदान रहा। पत्रिकाएँ नई सोच, नई दिशा और विचार समाज तक पहुँचाती हैं। ज्ञान का द्वार सबके लिए समान रूप से खुला जिसका परिणाम था व्यक्ति और समाज मन से अंधविश्वास उन्मूलन और रूढ़ियों का खंडन। केरल में समता, स्वतंत्रता और धर्म निरपेक्षता की चेतना विकसित हुई।

प्रथम समाचार पत्र 'राज्य समाचारम' (1847) के प्रकाशन के 38 वर्ष बाद ही पहली महिला पत्रिका 'केरलीय सुगुण बोधिनी' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद शारदा, भाषा शारदा, विद्या विनोदिनी, महिला रत्नम, केरल संचारी आदि पत्रिकाएँ निकलीं जो लंबे समय तक नहीं चल सकीं। केरल की महिला पत्रकारिता तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक आन्दोलन से जुड़ी रही। केरल के हर एक महिला पत्रकार के लिए पत्रकारिता अपने साहित्यिक लेखन अथवा समाज सुधार का विस्तार था। इन पत्रिकाओं के माध्यम से स्त्री-शिक्षा और जागरण की प्रेरणा मिली।

केरलीय सुगुणबोधिनी

यह 1885 में प्रकाशित केरल की प्रथम महिला पत्रिका मानी जाती है। इसमें रचनाकार महिलाएँ न होने के कारण इसे पहली महिला पत्रिका मानने में विद्वानों ने आपत्ति उठाई है। यह तिरुवनंतपुरम से प्रकाशित होती थी। इस बीच 1892 में 'महारानी' नामकी पत्रिका केरल में प्रचलन में थी जो चेन्नई से प्रकाशित होती थी। उसके संपादक राव बहादुर कृष्णामाचार्य थे। यह द्विमासिक पत्रिका थी जो महिलाओं के बीच अधिक लोकप्रिय नहीं हो सकी। केरल के प्रख्यात पंडित केरल वर्मा वलिया कोयीतम्पूरान की प्रेरणा से के. चिदंबरा वाद्यर और सी. नारायण पिल्लई ने इस पत्रिका का पुनः संपादन किया। इसमें प्रकाशित रचनाएँ पुरुषों द्वारा लिखी गयी थीं। औपनिवेशिक केरल में पुरुषों द्वारा स्त्रियों के लिए प्रकाशित पहली पत्रिका होने का श्रेय इसको है। पत्रिका के प्रथम अंक के संपादकीय में इस बात की ओर इशारा मिलता है कि स्त्री के जागरण और उन्नयन से ही समाज का विकास संभव है। स्त्री-नैतिकता, कर्तव्यपालन, संगीत, नैतिक कहानियाँ, मनोरंजन, महान स्त्रियों की आत्मकथा, देश का महान इतिहास, दर्शन, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद, पुस्तक समीक्षा आदि की चर्चा पत्रिका में होती थी। केरल में स्त्री जागरण के

Scanned with CamScanner